|| ओ३म् ||

आर्य मार्तण्ड

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक

वैदिक संस्कृति संरक्षण एवं सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध–आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, राजा पार्क, जयपुर

वर्ष – 94 अंक 09 पृष्ठ 16 मूल्य ₹ 5/- 5 फरवरी से 21 फरवरी 2020

आचार्य सत्यानन्द वेदवागीश स्मृति विशेषांक

महर्षि दयानन्द सरस्वती

स्वामी परिवार बीकानेर के बच्चों का यज्ञोपवीत संस्कार कराते हुए
आचार्य सत्यानन्द जी वेदवागीश

ओ३म्

आर्य मार्तण्ड

आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

एकादशी शुक्लपक्ष माघ विक्रम सम्वत् 2076, कलि सम्वत् 5120, दयानन्दाब्द 195, सृष्टि सम्वत् 01,96,08,53,120

आर. एन. आई नं.10471/60

संरक्षक

1. महाशय धर्मपाल जी (एम. डी. एच.)
2. श्री दीनदयाल जी गुप्त (डॉलर बनियान)

प्रेरणा स्रोत

1. श्री स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती
2. श्री विजय सिंह भाटी
3. श्री जगदीश प्रसाद आर्य
4. श्री मदनमोहन आर्य

प्रधान संपादक

श्री देवेन्द्र कुमार शास्त्री

प्रबंन्ध सम्पादक

1. आचार्य रविशंकर आर्य
2. डॉ. सन्दीपन आर्य
3. श्री अशोक शर्मा
4. श्री ओमप्रकाश विद्यावाचस्पति

आर्य मार्तण्ड वार्षिक शुल्क — ₹ 100/-

मासिक प्रकाशन सहयोगी — ₹ 3100/-

छः मासिक प्रकाशन सहयोगी — ₹ 5100/-

वार्षिक प्रकाशन सहयोगी — ₹ 11000/-

प्रकाशक

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान हनुमान ढाबे के पास, राजापार्क, जयपुर —302004

0141-2621879, 9352547258

e-mail : aryamartand@gmail.com

e-mail : arya.sabha1896@gmail.com

अनुक्रम

- मृत्युञ्जय — सम्पादकीय 04
- व्याकरण—धर्म—दर्शन — कृष्णपाल सिंह 05
- अतुलनीय विद्वत्ता — स्वामी मुक्तानन्द 07
- वेद के विद्वान् — आचार्य सत्येन्द्र आर्य 08
- मेरे पिता — श्रुतिधर आर्य 10
- उच्च कोटि के विद्वान् — सुभाष स्वामी 11
- आचार्य सत्यानन्द — किशन लाल गहलोत 12
- वेद एवं व्याकरण के सूर्य — अवनीश मैत्रिः 13
- आचार्य सत्यानन्द — अनीश शर्मा 14

यूको बैंक

खाता धारक का नाम :- आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, जयपुर

खाता संख्या :- 18830100010430

IFSC Code :- UCBA0001883

आर्य मार्तण्ड पत्रिका में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्याय क्षेत्र जयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी। स्वत्वाधिकारी, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान जयपुर की ओर से प्रकाशित, मुद्रक श्री देवेन्द्र कुमार शास्त्री द्वारा वी. के. प्रिन्टर्स सुदर्शनपुरा जयपुर से मुद्रित ।

सम्पादकीय......................

इस मर्त्य लोक में जन्म के बाद मृत्यु एवं मृत्यु के बाद जन्म का क्रम नदी की भांति अन्वरत चला आ रहा है। जीवन के क्रम में मनुष्य अनेक विषयों पर विजय प्राप्त करता है। दुर्बलता, गरीबी एवं अज्ञान पर उत्साह पूर्वक पुरुषार्थ करके बलवान सम्पन्न एवं ज्ञानवान बन जाता है। इस विजय यात्रा में उसकी दृष्टि जिस व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र पर पड़ती है उसे बल, बुद्धि, धन, पराक्रम से अपने वश में कर लेता है। लेकिन अचानक उसका सामना एक एसी परिस्थिति से होता है जिसमें सिर झुकाने के अतिरिक्त और अन्य कोई उपाय नही सूझता है और पराजय स्वीकार कर लेता है। आज मृत्यु से उसका सामना हुआ है। अब तक हर प्रतिद्वन्द्वी से जीत की पूर्वसज्जा रहती थी लेकिन मृत्यु को जीतने की तो कोई तैयारी ही नही थी। सारी दुनिया को वश में करने वाला आज न चाहते हुए भी अन्य के वश में होने के लिए विवश हो गया है। सामान्य जन की प्रायः एसी ही स्थिति होती है। लेकिन पूर्वजन्मों की संस्कारित कुछ दिव्य जीवात्माऐं होती हैं जो इस मृत्यु पर विजय प्राप्त करने का यत्न करती हैं, इस पाश को ढीला करती हैं। मृत्युञ्जय बनने के लिए वो सब करती हैं जो वेदादि शास्त्रों में निर्दिष्ट है। दीर्घकाल तक निरन्तर श्रद्धापूर्वक तपश्चर्या करती हैं, वेदादि शास्त्रों का अध्ययन–अध्यापन करती हैं एवं यथाशाक्ति ईश्वर की आज्ञा पालन रुपी भक्ति में तत्पर रहती हैं इन तीनों उपायों को करते हुए जन्मजन्मान्तर से चली आ रही क्लेश एवं कर्म रुपी अविद्या के बन्धन को शिथिल करती हैं जो कि पुनर्जन्म का कारण है।

पुनः अगले जन्मों में संचित कर्मों एवं संस्कारों के अनुसार पूर्व जन्म की अपेक्षा अधिक अच्छा जन्म धारण करती हैं। अपेक्षा से अधिक अच्छा शरीर, बुद्धि, परिवेश, ज्ञान प्राप्ति के साधन प्राप्त होते हैं तथा संसाधनों से और अधिक पुरुषार्थ करता हुआ प्रभु कृपा से मनुष्य जीवन के चरम लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल हो जाता है, मृत्युञ्जय बन जाता है, प्रभु को प्राप्त कर लेता है।

सर्वज्ञ परमेश्वर यजुर्वेद के माध्यम से जीवन की अस्थिरता को इस प्रकार स्पष्ट करते हैं–

अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता।
गोभाज इत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम्।।

यजुर्वेद 35/4

हे जीवों ! जिस जगदीश्वर ने कल ठहरेगा वा नहीं ऐसे अनित्य संसार में तुम लोगों की स्थिति की, पत्ते के तुल्य चञ्चल जीवन में तुम्हारा निवास किया, जिस सर्वत्र परिपूर्ण परमात्मा को ही सेवन करो उसके साथ पृथिवी, वाणी, इन्द्रिय वा किरणों का सेवन करने वाले ही तुम लोग प्रयत्न के साथ धर्म में स्थित होओ। **(महर्षि दयानन्द कृत भाष्य)**

पं. सत्यानन्द जी वेदवागीश एसे दिव्य व्यक्तित्व हैं जिन्होंने सच्चे ब्राह्मणत्व को प्राप्त करने का प्रयास किया। अपने जीवन का निवेश वेद के पठन–पाठन में किया एवं तदनुसार वैदिक जीवन जीने का यथासामर्थ्य प्रयास किया। पण्डित जी का जीवन नियमित दिनचर्या, व्यायाम, व्यक्तिगत यज्ञ–संध्या, मधुर भाषण, स्वाध्याय, अध्यापन, लेखन, उपदेश, शास्त्रार्थ, वेद व्याख्याकार इत्यादि अनेक गुणों से अलंकृत था जो कि पण्डित जी को मनुष्य स्तर से देव स्तर पर पहुँचा देता है और इसी के साथ मृत्युञ्जय बनने का रास्ता भी खुल जाता है। जिस पर चलकर जन्मान्तर में अमीष्ट को प्राप्त कर लेता है।

एसी पवित्र जीवात्मा के देहत्याग पर आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के अधिकारियों का विचार हुआ कि क्यों ना ऐसे व्यक्ति का जीवन जन

सामान्य के प्रकाश में आवे। जिससे अन्य भी पण्डित जी के जीवन से प्रेरणा लेकर अपने जीवन को यज्ञमय, वेदमय बनाते हुए पवित्र कर सकें। अतः फरवरी प्रथम अंक ''पं. सत्यानन्द वेदवागीश स्मृति विशेषांक'' के रुप में आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की ओर से ''श्रद्धाञ्जलि–मणि–माला'' स्वरुप में प्रस्तुत है।

–आचार्य रवि शंकर आर्य

व्याकरण–धर्म–दर्शन–साहित्य–शास्त्रार्थ महासमर के सेनापति, महावीर स्वर्गीय पं. सत्यानन्द वेदवागीश

जन्म स्थान, माता–पिता :– आप का जन्म राजस्थान प्रान्त के अजमेर जिला अन्तर्गत लीड़ी ग्राम में दिनांक 10 अक्टूबर 1963 ई. को माता श्रीमती सुगुणी देवी और पिता श्री ओंकार सिंह आर्य दहिया के घर हुआ। आपकी तीन बहिनें हैं जिनके नाम निम्र प्रकार हैं –

1. श्रीमती लक्ष्मी जी
2. श्रीमती सुन्दर जी
3. श्रीमती शीला जी।

आपके एक भाई चि. महेन्द्र सिंह दहिया हैं। आपकी शिक्षा व्यवस्था स्वग्राम से ही प्रारम्भ हुई, पश्चात् चित्तौड़गढ़ राजस्थान स्थित आर्य गुरुकुल में शास्त्री एवं व्याकरणाचार्य की उपाधि संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से प्राप्त की। एम. ए. संस्कृत आगरा विश्वविद्यालय आगरा, वेदवागीश आर्य गुरुकुल चित्तौड़गढ़ से प्राप्त कीं, ये सभी उपाधियाँ आचार्य प्रवर ने मेरिट से प्रथम श्रेणी में ही उत्तीर्ण की हैं।

आपकी प्रमुख गुरु परम्परा निम्न प्रकार है– आचार्य श्री वृतानन्द जी (सन्यासी, आपका पूर्व नाम युधिष्ठिर है), श्री डॉ. विश्वामित्र जी (गौरी विदनूर निवासी), श्री कान्हा सिंह जी कोहली, श्री पं. शोभितमिश्र जी (काशिका वृत्ति सम्पादक), श्री गुरुशंकर देव जी (नौनेर वाले), श्री पं. भीमसेन जी वेदवागीश आदि रहे हैं।

वैवाहिक जीवन :– आचार्य प्रवर का पाणिग्रहण संस्कार सुजानगढ़ जिला चुरु (राज.) निवासी पं. गणपति शर्मा की सुपुत्री सुमित्रा आर्या के साथ 23 जून 1963 ई. को सम्पन्न हुआ। आपके दो पुत्र 1. चि. श्रुतिधर आर्य, 2. चि. उदयन आर्य हैं।

शिक्षण कार्य :– सर्वप्रथम आर्य गुरुकुल चित्तौड़गढ़ में शिक्षण कार्य प्रारम्भ किया। यहाँ आपने आचार्य पद पर रहकर भी कार्य किया। राजस्थान उच्च मा. विद्यालय पुष्कर, Evening Sanskrit college, प्रवक्ता–पाणिनी महाविद्यालय भुवनेश्वर (उड़ीसा), प्रवक्ता–वनस्थली विद्यापीठ महाविद्यालय राजस्थान, आचार्य–सनातन धर्म संस्कृत महाविद्यालय लालसोठ राजस्थान, में कार्य किया।

आचार्य प्रवर वेद एवं वैदिक धर्म प्रचार–प्रसारार्थ अनेक स्थानों पर गये। यथा गुजरात, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, हरयाणा, महाराष्ट्र तथा मध्य प्रदेश आदि प्रान्तों में अनेक बार यज्ञ–संस्कार–वेद–धर्म प्रचारार्थ पदार्पण किया।

आचार्य प्रणीत ग्रन्थ निधि – आचार्य प्रवर विद्या अर्थात् सरस्वती के सच्चे उपासक रहे फलतः उन्होंने निम्न ग्रन्थों का प्रणययन किया–

1. दयानन्द वेद भाष्य भावार्थ प्रकाश (पूर्वखण्ड 1072 पृष्ठ)
2. दयानन्द वेद भाष्य भावार्थ प्रकाश (उत्तरखण्ड 878 पृष्ठ)
3. पाणिनीय शब्दानुशासनम् (पंचपाठी तथा विविध परिशिष्टों)
4. नामनिधिः (16 हजार नाम)
5. सूक्तिनिधिः
6. दयानन्द दृष्टान्त निधिः

7. दयानन्द प्रश्नोत्तर संवाद निधिः
8. वेदसहाय निधिः
9. बुद्धिनिधिः
10. आरम्भिक अनिवार्य शिक्षा
11. भक्ति सत्संग कीर्तन
12. अन्त्येष्टि संस्कार
13. अष्टाध्यायी प्रयोगदीपिकावृत्तिः
14. क्या महाभारत युद्ध रोका जा सकता था?
15. कामनानिधिः
16. अथर्ववेदभाष्यम् (संकल्पित),

सम्पादन कार्य :–

1. ऋग्वेद मणि सूत्र (पं. बुद्धदेव विद्यालंकार)
2. गीता समर्पण भाष्य, सरल संस्कृत
3. शतपथब्राह्मण समर्पण भाष्य (द्वितीय खण्ड)

सम्मान :– आपका सम्मान आर्य समाज व अन्य अनेक संस्थाओं ने समय समय पर किया।

1. आर्य समाज स्थापना शताब्दी के शुभ अवसर पर नया वांस आर्य समाज द्वारा
2. स्वामी सत्यपति ट्रस्ट द्वारा
3. विक्रम प्रतिष्ठान (अमेरिका) द्वारा भारत में।
4. शान्ताक्रुज आर्य समाज द्वारा वेदवेदांग पुरस्कार।
5. वैदिक यज्ञ समिति सोनीपत आदि।

शास्त्रार्थसमर के पुरोधा :– जोधपुर सरदारपुरा क्षेत्र के गान्धी मैदान नामक स्थान पर स्वामी करपात्री जी एवं अन्य पौराणिक मण्डल द्वारा उपायोजित सर्ववेद शाखा सम्मेलन के शुभ अवसर पर पौराणिक मण्डल के शिरोमणि स्वामी करपात्री जी का आर्य समाज रातानाड़ा जोधपुर राज. को शास्त्रार्थ का खुला आवाह्न पत्र प्राप्त हुआ। फायर विचारार्थ आर्य समाज के अधिकारियों की एक बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें आर्य समाज के वरिष्ठ अधिकारी प्रधान श्री केशव सिंह जी सांखला, श्री गुलाब सिंह जी गहलोत, श्री मदन सिंह जी और अन्य अनेक आर्य सभासद उपस्थित थे। निर्णय लिया गया कि शास्त्रार्थ करना चाहिए और शास्त्रार्थ हेतु आचार्य प्रवर को आमन्त्रित किया गया। आर्य समाज के निवेदन को तथा वेद, समाज एवं महर्षि दयानन्द के वैदिक सिद्धान्तों की रक्षार्थ आचार्य प्रवर का जोधपुर आगमन हुआ। शास्त्रार्थ आरम्भ हुआ जिसका नियम बड़ा ही विचित्र था। यथा पूर्वपक्षी (पौराणिक मण्डल) को अपने पक्ष को स्थापित करने का पूर्ण अवसर मिलता था, उसमें भी पहले पूर्वपक्ष द्वारा दिये गये वक्तव्य को संस्कृत भाषा में सबके सम्मुख प्रथम उपस्थित करके फिर अपने पक्ष को संस्कृत भाषा में ही स्थापित करें। यह नियम था। यही शास्त्रार्थ का क्रम था। परन्तु आर्य समाज के शास्त्रार्थ समर के सेनापति पं. सत्यानन्द वेदवागीश जी ने अपने व्याकरण, दर्शन के तीक्ष्ण प्रश्नवाणों की अनवरत वर्षा से सम्पूर्ण सर्ववेदशाखा सम्मेलन के आयोजकों, यतिमण्डल, विद्वान मण्डल को पराभूत कर निरुत्तर कर दिया। यहाँ उस समग्र विवरण को प्रस्तुत करने का अवकाश नहीं है, फिर भी एक विषय का प्रस्तुतीकरण समीचीन समझता हूँ पूर्वपक्ष (पौराणिक मण्डल) हम तो वेद की 1127 शाखाओं को वेद स्वीकार करते हैं, ऐसा डिमडिम घोष किया इस प्रश्न वक्तव्य पर शास्त्रार्थ महारथी पं. सत्यानन्द वेदवागीश जी ने कहा कि 1127 जिन्हें आप वेद स्वीकार करते हैं उनके क्रमशः नामों का उल्लेख कीजिए। 1127 शाखाओं के नाम बतायेगे तो आपका स्वयं का पक्ष धराशायी हो जायेगा। वेद आर्य समाज, पं. सत्यानन्द जी वेदवागीश का पक्ष प्रबल होकर विजयी हुआ। आज तक कोई भी 1127 शाखाओं के नामादि का कथन नहीं कर सकता है क्योंकि यह ता महाभाष्य में उक्त संख्या का कथन मात्र है। उक्त शास्त्रार्थ का प्रत्यक्षदर्शी लेखक स्वयं है जो इस शास्त्रार्थ समर में आचार्य प्रवर के साथ विद्यमान रहा है।

डॉ. कृष्णपाल, जयपुर

विद्वान् किसे कहते हैं? उपस्थिति का नाम विद्वान्। जिस व्यक्ति को जितना अधिक शास्त्र स्मरण है, अर्थ ज्ञान से है, वह उतना बड़ा विद्वान् माना जाता है। पण्डित सत्यानन्द जी वेदवागीश एक उच्च कोटि के विद्वान् थे। वर्तमान समय के आर्य जगत् में शिरोमणि मूर्धन्य विद्वान् थे। वर्णोच्चारण शिक्षा से लेकर वेद मंत्र तक अनेक शास्त्र कण्ठस्थ थे। पण्डित जी व्याकरण के भी धुरन्दर विद्वान् थे। वेद मंत्रो की व्याख्या करते व्याकरण के स्वरविधान से अर्थ का सारस्य अन्य विद्वानों से कभी सुनने को नहीं मिला है। पण्डित जी हस्त आमलकवत् सस्वर वेद व्याख्यान एवं पढ़ाते थे। उनके वेद मंत्रो की व्याख्यान सुनकर श्रोता गदगद् हो जाते थे। हमे भी वह सौभाग्य अनेक बार मिला। उनके हर व्याख्यान में शास्त्रों के गूढ़ रहस्य को हमारे व्यवहारिक जीवन के साथ क्या सम्बन्ध है इसकी हृदयस्पर्शी व्याख्या पण्डित जी से सुनने को मिलती थी।

कहीं भी कार्यक्रम में सायं काल यज्ञ/प्रवचन होता था तब जनता को भी सन्ध्या–उपसना के लिए आग्रह करते थे। सन्ध्या करते हुए अत्यधिक भावप्रवण होकर हृदय की गहराई से प्रार्थना करते थे।

वैदिक सिद्धान्तों के प्रति अत्यन्त निष्ठावान् थे। स्वाध्याय उनके जीवन का अभिन्न अंग था। प्रतिदिन सत्यार्थ प्रकाश पांच पृष्ठ नियमित पढ़ते थे। कितने बार पूरा पढ़े होंगे अनुमान किया जा सकता है। महर्षि दयानन्द के प्रति अटूट श्रद्धा थी। भावार्थ प्रकाश नामक दो पुस्तकें पण्डित जी द्वारा सम्पादित की गई हैं। महर्षि दयानन्द जी ने जितना वेद भाष्य किया उसके भावार्थ में जो लिखा वह सत्यार्थ प्रकाश में कहाँ वर्णित है? सभी मन्त्रों को समायोजन किया। अति विशेष कार्य है, सत्यार्थ प्रकाश का सिद्धान्त वेद में कहाँ है प्राप्त करने का अद्भभुद ग्रन्थ है। अष्टाध्यायी प्रयोग दीपिका, धातुपाठ प्रयोगदीपिका, उणादि अन्य शास्त्र का प्रयोग दीपिका अर्थात् वेदमंत्र में कहाँ पर इन उदाहरण उपलब्ध है उनका वर्णन करना अन्य विद्वानों के लिए असम्भव जैसा कार्य है। तीनों ग्रन्थ विशाल आकार में हैं, उसका भार उठाना ही दुरुह है और समझना– समझाना अति विशिष्ट विद्वात्ता का परिचायक है। ऐसे ही निधि श्रृंखला में नाम निधि से लेकर वेद सहाय निधि, यज्ञ–निधि आदि दर्जन से अधिक निधि सम्पत्ति हमें आर्य जनता को सुपुर्द करके गये हैं। महर्षि पाणिनि के पाच्य ग्रन्थ एकत्र एक पुस्तक में उपलब्ध करने का श्रेय तथा धातु आदि में लुप्त अनुनासिक ज्ञान को प्रकाशित करने का गौरव पण्डित जी को प्राप्त है। इसके लिए विधार्थी जगत पण्डित जी की कृति के लिए चिर ऋणि रहेगा। उनके पाण्डित्य को हम कभी नहीं भुला सकते हैं।

उनके समान यज्ञप्रेमी मिलना दुर्लभ है। प्रतिदिन नियम पूर्वक यज्ञ व्यक्तिगत प्रथक रुप में अनुष्ठान करते थे। सामूहिक यज्ञ में सम्मिलित होने के बाद भी जब कभी कहीं गुरुकुल/आर्य समाज में प्रचार व्याख्यान को कार्यक्रम दोनों समय होता था, यज्ञ पृथक करने के लिए समय नहीं मिलता था तो अपने व्यक्तिगत धन से घी सामूहिक यज्ञ के लिए प्रदान करते थे। उनका निर्देश था जिसके पास भी बैंक एकाउन्ट है उन सबको हवन अवश्य करना चाहिए।

व्यक्तिगत रुप में उनका सान्निध्य अनेक बार प्राप्त हुआ। प्रेरणा प्राप्त करने के लिए किसी ब्रह्मचारी को साथ लेकर उनके प्रकोष्ठ में जाते थे। विद्या का अभिमान नहीं था, अत्यन्त सरल एवं साधारण रुप से जीवन जीना, व्यवहार करना, दूसरों को भी सम्मान करना उनकी अन्यतम विशेषता थी। प्रायः विद्यार्थियों को उनका नाम और उसमें समास पूछते थे। जैसे नीतिकार कहते हैं विद्वान्/गुरु–आचार्य के पास खाली हाथ नहीं जाना चाहिए, तो कुछ सूखे मेवे, रुपये लेकर हम जाते थे तो कहते थे आप तो सन्यासी हो आपको मेरे से लेना चाहिए देना नहीं। हम कहते थे आपकी योग्यता सबसे अधिक है इसलिए हमारी

श्रद्वा है कृपया हमारी श्रद्धा भंग न करें। तभी लेते थे। तब भी कुछ न कुछ पुस्तकें देते थे। डाक से भेज दूँगा और कौनसी पुस्तक चाहिए बताओ। आत्मीयता के साथ व्यवहार करते थे। जिससे मन तृप्त हो जाता था और एक बार भी नहीं होगा जब हमें विद्यावृद्धि के लिए प्रेरणा न मिली हो। न केवल हमें अपितु अनेकों का कहना है पण्डित सत्यानन्द जी की व्याख्या सुनने से वेद के उच्च कोटि के विद्वान् बनने की इच्छा हमारे अन्दर उद्बुध हो रही है। उनके प्रति आर्य समाज सदा कृतज्ञ रहेगा। पण्डित जी ने अनेक परिवारों को सद्गृहस्थ बनाया, नित्य यज्ञ करने की प्रेरणा दी।

पण्डित जी का जीवन व प्रवचन दोनों पूरक रहे, अभयत्र ईश्वर विश्वास परिपूर्ण देखने को मिलता रहा। वैदिक साहित्य के सारस्वत साधक रहे। अनेक गुरुकुलों में व्याकरण आदि शास्त्रों का अध्यापन किया। कन्याएं भी वेद की विदूषी बनें इसके लिए प्रयास किया। वैदिक धर्म, वैदिक वाङ्मय के प्रचार–प्रसार के लिए सम्पूर्ण जीवन का विनियोग करने वाले आचार्य सत्यानन्द जी भले आज सशरीर हमारे साथ नहीं हैं, किन्तु उनका विद्याप्रेम और आस्तिकता की छाप हम सभी अनुभव करते हैं। हमारे हृदय में उनके प्रति सम्मान का भाव आजीवन रहेगा, उनकी प्रेरणा से हम विद्या की वृद्धि करेंगे। विद्या पढ़ने से क्या लाभ होता है, उसको समझने के लिए वरिष्ठ विद्वान् ज्वलन्त उदाहरण हैं, जिनकी विद्वत्ता अतुलनीय है। उनके तुल्य समकक्ष विद्वान् आज हमारे मध्य में उपस्थित नहीं है। किन्तु उनकी कृति से वैसे विद्वान् निर्माण के बीज अवश्य उपलब्ध हैं। उस बीज को उनकी विद्याप्रेम, विद्या–निष्ठा को हम अपने जीवन में धारण करें अन्यों में कराएं यह उनके प्रति वास्तविक श्रद्धांजलि होगी। विद्या के प्रति जीवन उत्सर्ग, पण्डित जी का यज्ञप्रेम, ईश्वर विश्वास, आदर्श व्यक्तित्व, वेद एवं दयानन्द महर्षि के प्रति निष्ठा हमारे जीवन में अवतरित करना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि बनेगी। शरीर मर्त्य है, उनका यश कीर्ति अमर है। हम भी उस अमर कीर्ति यश के धारक बनें, आदर्श व्यक्तित्व को अपनाकर पण्डित सत्यानन्द जी के संस्मरण के साथ ''तेजस्वि नावधीतमस्तु'' को सार्थक करें।

कृतज्ञता के साथ
स्वामी मुक्तानन्द परिव्रजाक, रोजड़

व्याकरण और वेद के उद्भट् विद्वान्, महर्षि दयानन्द के अटूट भक्त, सच्चा ईश्वर भक्त, यज्ञ प्रेमी स्मृति शेष आचार्य सत्यानन्द जी के सानिध्य में मेरे सुखद अनुभव।

श्रद्धेय स्वर्गीय आचार्य सत्यानन्द जी वेद और व्याकरणादि शास्त्रों के तलस्पर्शी विद्वान् के रूप में सम्पूर्ण आर्य जगत् के अन्दर प्रतिष्ठा और श्रद्धा के साथ याद किये जाते थे। आचार्य जी का सम्पूर्ण जीवन त्याग और तपस्या की झाँकी प्रस्तुत करता है वैदिक सिद्धान्तों और वेद के प्रति असीम गहरी निष्ठा उनके एक–एक श्वांस में अनुप्राणित होती दिखाई देती थी। वेदमन्त्र की व्याख्या करते समय मंत्र के एक–एक पद को सरल व सुगम शैली से मंत्र के अप्रत्यक्ष किन्तु यथार्थ तत्व से श्रोताओं या वेद के अध्येताओं को अवगत कराके उन्हें आनन्द विभोर कर देते। मैं स्वयं इस बात का प्रत्यक्षदर्शी रहा हूँ। वेद और व्याकरणादि शास्त्रों का गहराई से मन्थन करने वाला ही इस शैली की व्याख्या दे करके वेद को आधुनिक समाज के परिप्रेक्ष्य में उच्च स्थान पर आसीन करता है वहाँ–वहाँ राष्ट्र में धर्म के नाम पर बढ़ रही हिंसा और पाखण्ड की बखिया उधेड़ कर रख देता है।

''महः पुनातु हृदये'' संध्या में आए इस मार्जन के मंत्र में मनुष्य को उदार हृदय होने की कितनी महत्वपूर्ण आवश्यकता की बात कही गई है उदार चेता मनुष्य ही दूसरों के लिए उदारहृदय रख सकता है अनुदार मनुष्य से न अपना कुछ सधता है और न ही दूसरों का वह स्वयं भी कष्ट में रहता है और दूसरों को कष्ट देने में किञ्चित भी पीछे नहीं रहता। आचार्य श्री के साथ दो या तीन

बार वेद पारायण यज्ञानुष्ठान में रहने का मुझे सुअवसर प्राप्त हुआ, प्रायः देखा जाता है कि वेद पारायण मंत्रों में विद्वान् मंत्र पाठ नहीं करते वेद पाठ के लिए ब्रह्मचारियों या वेदपाठियों के लिए इस काम पर नियुक्त किया जाता है लेकिन आचार्य जी स्वयं भी वेदपाठियों के साथ मंत्रोच्चारण करने में लगातार सहयोग करते थे और थोड़ी–थोड़ी देर बाद मंत्र की व्याख्या भी सारगर्भित शैली से करते हुए वेद की शिक्षा और महत्व भी श्रोताओं को हृदयंगम करा देते थे। स्वयं वेद पाठ करना, अत्यंत श्रद्धा और लगन से करना इस बात का परिचायक है कि आचार्य श्री वेद के प्रति कितने समर्पित रहते थे। यद्यपि उनकी एक आँख में कोई दोष था जिससे वे ठीक से देख नहीं पाते थे, पुनश्च इस कार्य को करने में उत्साह ही दिखा था, उदासीनता नहीं।

एक बार की बात है मैं और आचार्य जी अजमेर के एक परिवार में ऋग्वेद पारायण यज्ञ में साथ–साथ रहे थे, सामान्य यज्ञ के पश्चात् वेदपाठ के लिए मंच पर बैठना था थोड़ी ही देर वेदपाठ हुआ। मैंने आचार्य श्री को कहा कि आप मंच पर शोभायमान हो जाइये मैं नीचे बैठता हूँ और नीचे बैठकर ही वेदपाठ करूँगा। तुरन्त वे बोले नहीं नहीं आप ही मंच पर बैठें मुझे आँख से ठीक दिखाई नहीं देता है। मैंने बहुत आग्रह किया परन्तु वे नहीं माने नीचे ही बैठकर वेद पाठ करते रहे, यह प्रेम और सहानुभूति पूर्ण व्यवहार मलिन और संकीर्ण हृदय से नहीं हो सकता। कोई भी गुण पहले भीतर निखरता है पुष्ट होता है, वही गुण बाहर के व्यवहार का दर्पण बनकर व्यक्तित्व को भव्य बना देता है। राष्ट्र को ऐसे ही महान् व्यक्तित्व सम्पन्न मानव की आवश्यकता है और इस तरह के मानस रखने वाले ही राष्ट्र को सही शिक्षा व दिशा दे सकने में समर्थ होते हैं।

संध्या, यज्ञ प्रेमी इतने कि बिना यज्ञ किये कुछ ग्रहण नहीं करते थे। जब तक यज्ञ व संध्या न हो जाये, उससे पहले कुछ खाना ही नहीं जो कुछ करना है, इन दोनों के बाद ही करना है। एक बार यज्ञ के संबन्ध में मुझे आमन्त्रित किया गया था, बहुत लोग इकट्ठे थे, आचार्य श्री का यज्ञ आदि विषयों पर नित्यप्रति व्याख्यान भी हुआ करता था। लोग बड़े ही दत्तचित होकर सुनते और अपने को धन्य मानते। बहुत ही सुन्दर व आध्यात्मिक वातावरण बना रहता था, संयोग से एक दिन आर्य समाज के मंत्री जी का व्याख्यान भी यज्ञ विषय पर हुआ, वाक्पटुता में कोई भी कमी नहीं दिखाई देती थी। बहुत ही सधे हुए शब्दों में बोतले थे। व्याख्यान समाप्त हुआ, आचार्य श्री उनके पास ही थे, पूँछ लिया मंत्री जी आपका व्याख्यान यज्ञ विषय में बहुत ही अच्छा लगा परन्तु मैं एक बात आपसे पूँछना चाहता हूँ कि क्या आप यज्ञ करते भी है? मंत्री जी ने जवाब दिया–यज्ञ तो नहीं करता, आचरण में जो नहीं है और बिल्कुल ही नहीं उस विषय पर बोलना अनाधिकृत चेष्टा के अतिरिक्त और नया कहा जा सकता है।

जीवन भर अपने को बालक ही समझते रहे क्योंकि बालक बनकर ही कुछ सीखा व समझा जा सकता है। जब कोई इस तरह की बात उठती थी तो तत्काल कहते कि देखो तुम्हारे सामने चौरासी या पिचासी साल का बालक बैठा है।

संसार में जब भी कोई प्राणी जन्म लेता है मृत्यु भी उसका साथी बन जाती है न जाने कब कौन सा निमित्त पाकर जीवन समाप्त कर दे। यह अनिश्चित है कभी भी कहीं पर भी मृत्यु उस प्राणी का जीवन समाप्त कर देती है परन्तु मृत्यु पर किसी का वश भी नहीं चला। यह जगत् संयोग और वियोग के नियम से चलता है।

''भस्मान्तं शरीरम्'' के अनुसार सभी शरीरों का अन्त निश्चित् है।

अन्त में उस महामानव दिवंगत आत्मा को शत् शत् प्रणाम करता हूँ और मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि सभी आर्य जनों को इस अपार दुःख में धैर्य और शान्ति का संबल देकर आचार्य श्री के शेष कार्यों को पूरा करने के लिये उत्साह और शक्ति प्रदान करें।

आचार्य सत्येन्द्र आर्य
वानप्रस्थ साधक आश्रम, रोजड़

मेरे पिता

आचार्य सत्यानन्द वेदवागीश विद्वत्ता तथा सरल व्यक्तित्व का अभूतपूर्व संगम हाँलाकि आज मेने पिता को खो दिया, पर निश्चित रुप से उन्होंने जो मेरे जीवन मे अमिटा छाप छोड़ी है, वो मेरे व्यक्तित्व को निरन्तर रुप से संवारती रहेगी। मेरे पिता आचार्य सत्यानन्द वेदवागीश जी विश्व के उन चुनिंदा विद्वानों में से एक थे, जो वेद और व्याकरण के क्षेत्र में न केवल पारंगत थे परन्तु संस्कृत भाषा की अपार धरोहर के धनी थे। इतने उच्च कोटि के विद्वान् होते हुए भी मेरे पिता बहुत ही सरल तथा व्यवहारिक थे। उन्होंने बड़ी ही कुशलता से अत्यधिक कठिन परिस्थितियों में अपने पारिवारिक उत्तरदायित्व का कुशलतापूर्वक निर्वाह किया।

मेरे आज के व्यक्तित्व के निर्माण में निश्चय ही पिता श्री का अभूतपूर्व योगदान है। उनके आशीर्वाद तथा लगातार प्रोत्साहन के कारण ही 2 वर्ष पूर्व न्यूर्याक स्थित संयुक्त राष्ट्र के मंच पर बोलने का अवसर ग्रहण किया। उन्होंने मुझे विषम परिस्थितियों में भी किस तरह आगे बढ़ते रहना है, की प्रेरणा दी।

मेरा सौभाग्य है कि मै आचार्य सत्यानन्द वेदवागीश जैसे उच्च कोटि के विद्वान् का पुत्र हूँ। बहुत कम लोगो को संभवतया यह जानकारी होगी कि मेरे पिता न केवल वेदों के प्रकाण्ड पण्डित थे परन्तु अंग्रेजी भाषा पर भी उतना अधिकार रखते थे। हम दोनों भाईयों को जहाँ संस्कृत व्याकरण की अष्टाध्यायी कंठस्थ करायी। वहीं ॅतमद – डंतजपद नामक अंग्रेजी व्याकरण की पुस्तक द्वारा अंग्रेजी भाषा के लेखन में कुशलता हासिल करवायी।

जहाँ एक ओर प्रतिदिन 14 से 16 घण्टों का स्वाध्याय तथा अध्ययन उनकी नियमित दिनचर्या का हिस्सा था, वहीं जब भी माता–पिता व हम पुत्रों को पति व पिता रुपी सत्यानन्द की आवश्यकता थी। उन्होंने कुशलता से अपनी जिम्मेदारी का निर्वाह किया। खुद के ऊपर कुछ भी न खर्च करते हुए, उन्होनें हमारे लालन–पालन में कभी कोई कमी नहीं छोड़ी। उन्होंने हमेशा अच्छे खाध्य पदार्थ उपलब्ध कराये। संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान् होने के साथ साथ वो पाक कला में भी उतने ही निपुण थे। जब माताजी विद्यालय में शिक्षिका थीं और उन्हें अलवर से 25 किमी दूर नियमित अध्यापन के लिये जाना पड़ता था, हमारे पिता ने हमेशा हमें ताजा तथा स्वादिष्ट भोजन बनाकर दिया नाकि रात का बासी जो फ्रिज में रखा हुआ। जितना आनन्द उन्हें हम पारिवारिक जनों को खिलाने में आता था, उतना ही अतिथि सत्कार में, वो अतिथि चाहे कोई विद्वान् हो, आर्य समाजी, पड़ोसी या मेरा कोई मित्र। सभी को इतना आग्रह तथा प्रेम से खिलाते थे कि आज भी वो याद करके चक्षु नम हो जाते हैं। चुकन्दर का हलवा तथा मेवा युक्त खीर उनकी पाक कला के अभूतपूर्व उदाहरण थे। उनका व्यक्तित्व इतना सरल था कि हमेशा कम से कम संसाधनों के साथ भी किस तरह खुश रहा जाता है। मैंने यही सीखा। त्याग की भी प्रतिमूर्ति थे मेरे पिता, अपने छोटे भाई के ग्रामीण परिवेश में रहने के कारण उन्होंने अपने पिता की लीड़ी ग्राम, जिला अजमेर स्थित पैतृक सम्पत्ति में से कुछ ना लेने का निर्णय लिया तथा हम दोनों पुत्रों को भी ऐसा करने की सलाह दी।

मेरे पिता उन चुने हुए व्यक्तियों में से थे, जिनकी कथनी और करनी में कभी अन्तर नहीं था। चाहे वो अंतर्जातीय विवाह हो, बिना दहेज के विवाह करना हो, कोई दिखावा ना करना, बिना फिजूल खर्ची के जीवन व्यतीत करना, शुद्ध व सात्विक भोजन करना। वे हमेशा सत्य के मार्ग पर आगे बढ़ते रहे। मृत्यु पर्यन्त उन्हे हमेशा ये चिन्ता रहती थी कि उनके कारण किसी भी पारिवारिक सदस्य को कोई असुविधा न हो। हर कार्य खुद करने के लिए तत्पर रहते थे। यहाँ तक की दूरभाष पर भी सीमित मात्रा में ही बात करते थे। क्योंकि समय और पैसे दोनों की वर्वादी मानते थे।

श्रुतिधर आर्य, जयपुर

आपका हमारे परिवार के साथ कई वर्षों तक सानिध्य रहा। हमारे स्वामी परिवार में वेद के पठन–पाठन की प्रक्रिया श्रद्धेय आचार्य भीमसेन जी द्वारा शुरु की गयी थी। आचार्य भीमसेन जी ने आचार्य सत्यानन्द जी वेदवागीश का हमारे परिवार के साथ परिचय करवाया। दो तीन साल तक इन दानों आचार्यों ने मिलकर साल में एक बार हमारे पुराने घर व विद्यालय में चतुर्वेद परायण यज्ञ करवाते रहे। इसके बाद आचार्य सत्यानन्द जी हर साल में एक बार चतुर्वेद परायण (15–15 दिन) दो भागों में हमारे परिवार व हमारे राष्ट्र सहायक विद्यालय, व्यास कालोनी परिवार के साथ करवाते रहे।

स्वनाम धन्य वेद विद्वान् आचार्य जी वेदों के मंत्रों की व्याख्या बहुत सरल भाषा में करते थे ताकि साधारण मनुष्य भी सरलता से मंत्रों के भावों को समझ सके। हमारे विद्यालय परिवार के सभी अध्यापक व विद्यार्थी अपनी रुचि से यज्ञ में शामिल होते थे क्योंकि आचार्य जी वेद मंत्रों के गूढ़ विषयों को हमारे जीवन के साथ जोड़कर समझाते थे।

आचार्य जी यज्ञ दिनों में हमारे घर, बीकानेर में रहते थे, उस दौरान मेरे पिताजी श्री रामनारायण जी स्वामी व माता जी स्वर्गीय श्रीमती कौशल्या देवी व हमारा पूरा परिवार उनका बहुत आदर सत्कार करते थे। इनके भोजन की व्यवस्था का मेरी माताजी व मेरी धर्मपत्नी श्रीमती निधि स्वामी विशेष रूप से ध्यान रखती थीं। इसलिए कई बार आचार्य जी की धर्मपत्नी श्रीमती सुमित्रा आर्या भी हमें कहती थीं कि जब आचार्य जी बीकानेर में होते हैं तब मुझे इनके रहने व खाने–पीने की कोई चिंता नहीं रहती है। परिवार में बच्चों से लेकर पिताजी व माता जी तक सभी जन इनका अपने घर के बुजुर्ग से भी अधिक ध्यान रखते थे।

आचार्य जी ने हमारे परिवार में विभिन्न संस्कार जैसे मेरा विवाह संस्कार व इसके बाद परिवार के सारे संस्कार (गर्भाधान संस्कार, नामकरण संस्कार आदि) आपके द्वारा ही करवाये गये। विशेषकर उपनयन संस्कार, यज्ञोपवीत संस्कार तो हमारे पारिवारिक सात आठ बच्चों का एक साथ करवाया गया।

आचार्य जी जब बीकानेर होते थे तब वे अपने कमरे में हर समय कार्य में व्यस्त रहते थे, कभी लिखते रहते थे तो कभी स्वाध्याय करते रहते थे। जब बैठे बैठे थक जाते थे तो खड़े खड़े लिखना व पढ़ना शुरु कर देते थे। एक बार मेरी धर्मपत्नी ने उनसे पूछा कि आचार्य जी आप पूरे दिन कुछ लिखते रहते हैं या पढ़ते रहते हैं, आप थकते नहीं हो। इतना आप क्या लिखते रहते हैं? तब आचार्य जी ने बताया कि अगले जीवन में जब मैं आऊं तो अभी जो ज्ञान पढ़ लिख लिया है, उससे और आगे का पढ़ूं लिखूं ना कि वापस नये सिरे (शुरु) से पढ़ूं।

वेद के शीर्ष विद्वान् श्रद्धेय आचार्य जी ने वेद के पठन–पाठन व श्रवण–श्रावण को परम धर्म बताते हुए वेदों की शिक्षाओं को आत्मसात करने और आचरण में लाने की आवश्यकता बताई। कृत संकल्प आचार्य जी ने मेरे पिताजी की सहायता से एक शुभ कार्य चारों वेदों के मंत्रों को धीमीगति व सही स्वर व उच्चारण में कैसिड्स और एम. पी. 3 सीडी के द्वारा रिकार्डिंग का कार्य कई महीने रोज 5–5 घण्टे बैठकर पूरा किया ताकि सभी मनुष्य सरल व सही स्वरों के साथ उच्चारण सुनें व सही उच्चारण करना भी सीख सकें। यह कार्य वेद प्रचार की भावना से किया गया व बिना किसी लाभ के तथा लागत मूल्य से कम मूल्य पर एम. पी. 3 बीकानेर वैदिक शोध संस्थान में उपलब्ध है।

आचार्य जी स्पष्ट वक्ता थे। यज्ञ के प्रति बहुत श्रद्धा रखते थे तथा दूसरों को भी यज्ञ करने के लिए कहते थे। किसी कार्यक्रम के दौरान संध्या का समय होने पर सामूहिक रूप से संध्या बहुत भक्ति के साथ करवाते थे। आचार्य जी मातृ शाक्ति का बहुत सम्मान व आदर करते थे।

आचार्य जी की शास्त्रों में बहुत अच्छी पकड़ थी, स्मृति भी बहुत अच्छी थी, वेदों के मंत्र कंठस्थ थे व सत्यार्थ प्रकाश के पृष्ठ व पंक्ति सहित याद रहती थी। स्वाध्याय, लेखन, प्रचार व प्रसार में बहुत अग्रणी रहे, इसलिए इनकी आर्य जगत् में बहुत

लोकप्रियता रही, परिणाम स्वरुप कई शहर इनके कर्मस्थली बने। अपनी व्यस्तता के कारण आचार्य जी ने हमारे परिवार के साथ आचार्य हरिप्रसाद जी का परिचय करवाया जो अभी अमेरिका में प्रवास कर रहें हैं। अद्वितीय वैयाकरण आचार्य जी ज्ञान के प्रचार व प्रसार के लिए हमेशा तत्पर रहे। अपने प्रवचन में भी कहते थे कि आचार्यों के द्वारा हमारा यह अध्ययनाध्यापन नियमित रूप से चलता रहे।

आचार्य जी महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त रहे व सरल स्वभाव, निष्ठापूर्वक व्यवहार रहा। जब उनसे कोई मिलने आते तो अपनी पुस्तकें देते, साथ ही स्वाध्याय करने के लिए प्रेरित करते थे।

हम सभी आचार्य सत्यानन्द जी वेदवागीश के द्वारा दिये गये ज्ञान व सिद्धान्तों पर चलें, जीवन पर्यन्त वेद का स्वाध्याय, यज्ञ व संध्या भक्ति के साथ करें, यही उनकी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

सुभाष स्वामी, बीकानेर

आचार्य सत्यानन्द वेदवागीश जी का जोधपुर प्रवास का स्वर्णिम समय।

आचार्य सत्यानन्द वेदवागीश जी का जोधपुर के आर्यों पर विशेष आर्शीवाद रहा है। इनका जोधपुर से जुड़ाव 50 वर्षों से रहा है इसका उदाहरण है जब ''महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास'' 1972 में बना, उसमें आजीवन सदस्य के रुप में अपना आर्शीवाद न्यास को देते रहे थे एवं अपने ज्यादातर साहित्य जोधपुर में आर्यों के घर पर रहकर लिखे व प्रकाशित किये गये। उन आर्यों में मूल नाम श्रीमान् केशव सिंह सांखला–उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, श्रीमान् शम्भूमल जी, श्रीमान् ओमदत्त जी गहलोत, श्रीमान् नथमल जी गहलोत, जयपुर के चन्द्रप्रकाश जी देवड़ा इन सभी के घर में रहकर इन परिवारों को अपना परिवार समझकर ही वैदिक धर्म के पथ पर चलने एवं नित्य यज्ञ करने की प्रेरणा दी है। परिवारों के पुत्र–पुत्रीयों का नामकरण संस्कार एवं विवाह संस्कार कराने का भी सौभाग्य रहा है। इन परिवारों में रहकर इन्हें कोई कष्ट नहीं देते थे। जब भी प्रेस जाना होता था तो सिटी बस में जाते थे। अगर उन्हें पुस्तकें भेजनी होती तो स्वयं ही जाकर पोस्ट आफिस से भेज देते। इनकी सादगी इतनी थी कि उच्च कोटि के विद्वान् होते हुए भी कभी घमण्ड को अपने पास नहीं आने दिया। परिवार से दूर रहकर आर्य जगत् को अपना जो आशीर्वाद दिया वह जन्मों जन्मों तक याद रहेगा। मेरे घर में रहते हुए मुझे मेरे पिता के जाने के बाद भी पिता की कमी नहीं महसूस हुई। उनको अपना पिता समझकर उनकी सेवा–सुश्रूषा में स्वयं मैं, मेरी धर्मपत्नी सरस्वती एवं मेरा परिवार लगा रहा। आपके साहित्य प्रकाशन में भी विजय सिंह जी भाटी, यशवन्त जी, जयसिंह जी गहलोत का सहयोग रहा है। वो अपने जीवन के व्यतीत दिनों को सुनाया करते थे। जिससे वैदिक धर्म में विश्वास बढ़ता था, परिवार में यज्ञ करने की श्रद्धा प्रगट हो जाती थी। मेरा परिवार उनका स्मरण हर समय करता रहेगा और सत्य पर चलकर वैदिक धर्म व आर्य समाज के सिद्धान्तों को फैलाने में अपना तन–मन–धन देता रहेगा, मुझे उनके अन्तिम समय में जो सेवा करने का मौका मिला वह परमात्मा का मुझ पर आशीर्वाद समझूंगा। आपने स्मृति भवन के आजीवन सदस्य रहते हुए न्यास के सदस्यों को और न्यास को गति प्रदान की। उसी का परिणाम आज न्यास अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की संस्थान स्थापित हो सकी। हमें गर्व है कि ऐसे कर्मठ, वैदिक धर्म के प्रहरी, महर्षि दयानन्द के सच्चे अनुयायी पर जिन्होंने मनुष्य जन्म को सार्थक सिद्ध किया। उनका नाम अमर रहे उसके लिए ''महर्षि दयानन्द स्मृति भवन न्यास'' ने ''आचार्य सत्यानन्द वेदवागीश वेद प्रचार निधि'' जो 21 लाख की होगी, स्थापित करने का संकल्प लिया। इस निधि के ब्याज से अर्जित राशि प्रतिवर्ष गुरुकुलों के प्रतिभावान् छात्रों को छात्रवृत्ति दी जाएगी, वैदिक विद्वानों को सम्मानित व वेद प्रचार हेतु वैदिक साहित्य का प्रकाशन कराया जाएगा। ऐसे महान् मनीषी को मेरा शत् शत् नमन।

किशन गहलोत, मंत्री–स्मृति भवन जोधपुर

वेद एवं संस्कृत व्याकरण के सूर्य–आचार्य सत्यानन्द 'वेदवागीश'

आचार्य सत्यानंद जी वेदवागीश वेद और संस्कृत व्याकरण के प्रकांड सूर्य थे जिनकी विद्वत्ता योग्यता और क्षमता को मेरी वाणी और लेखनी व्यक्त करने में समर्थ नहीं है। आचार्य श्री का जीवन इस आधुनिक काल में भी एक ऋषि के सामान वेद और सत्य के मार्ग को पूर्णतया समर्पित था। वे ईश्वर के परम भक्त, ईश्वर विश्वासी, महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य शिष्य, वेद आदि सत्य शास्त्रों पर दृढ आस्था रखने वाले और सभी आर्ष सिद्धांतो को अपने जीवन में धारण करने वाले सच्चे आर्य पुरुष थे।

आचार्य जी को मैं और मेरा परिवार गुरु जी कहा करता था, मेरा आचार्य जी से प्रथम परिचय आर्य समाज बजाजा बाजार अलवर में हुआ जब मैं प्राइमरी कक्षा का विद्यार्थी था । उन दिनों भी मेरे पिताजी परिवार सहित आर्य समाज की सेवा में समर्पित रहते थे । मेरे पिता जी को पौरोहित्य कार्य का प्रशिक्षण और कालान्तर में संस्कार आदि कराने की दक्षता गुरूजी की ही देन है । मेरे परिवार में अधिकांश हम सभी भाई बहिनों और बच्चो के संस्कार भी गुरूजी ने ही कराये थे। पूज्य आचार्य जी का पावन सानिध्य हमारे परिवार द्वारा उनके ब्रह्मत्व में गत वर्ष जनवरी 2019 में आयोजित सामवेद पारायण महायज्ञ उदयपुर में प्राप्त हुआ था। मैं बचपन से ही अपने माता–पिता के साथ गुरु जी के घर अक्सर जाया करता था, मेरे पिताजी उनके बारे में अनेक रोचक बातें मुझे बताया करते थे। आचार्य श्री का जीवन ऋषि के कार्यो को, आर्य समाज के उत्थान को और वेद विद्या के प्रकाश को मानवमात्र के लिए प्रकाशित करने के लिए पूर्णतया समर्पित रहा था, इस सब की खातिर आपने अनेको राजकीय सेवाओं को तिलांजलि दी। जो भी राजकीय सेवा उनके सिद्धांतो के विरुद्ध या व्यक्तिगत आध्यात्मिक उन्नति में बाधा बनी, आपने निःसंकोच बिना धन या आजीविका की परवाह किये तुरंत त्याग दी।

आपका विवाह भी श्रेष्ठ गुण–कर्म–स्वभाव के आधार पर विशुद्ध वैदिक विवाह (23–6–1963) था। पूज्या माता सुमित्रा जी (सुजानगढ़ चूरू राजस्थान निवासी पंडित गणपति शर्मा जी की सुपुत्री) ने अपनी स्वेच्छा से आचार्यश्री की योग्यता विद्वत्ता को पहचान कर उनसे विवाह किया था। माता जी राजकीय सेवा में व्याख्याता पद से सेवानिवृत हुई, सो कभी भी पारिवारिक जिम्मेदारी ने आचार्यश्री के तपस्वी जीवन को बाधित नहीं किया, इस सहयोग के लिए गुरूजी सदैव उनका आभार मानते रहे थे। आपका साथ आचार्य जी के प्रचार कार्यों में दृढ़ भूमि प्रदान करता रहा था।

संस्कृत सनातन धर्म संस्कृत महाविद्यालय लालसोट राजस्थान में आपके चयन के बाद आपकी प्रतिदिन की वेशभूषा धोती कुर्त्ता आदि से अधिकारीगण बहुत प्रसन्न हुए, पश्चात् आपके विशुद्ध उच्चारण, संस्कृत व्याकरण पर पकड़ और वेद व्याकरण की विद्वत्ता देखी तो प्रश्न पूछा कि क्या आप आर्य समाजी हैं ? आचार्य जी ने उत्तर दिया–हाँ, मैं महर्षि दयानन्द का शिष्य, आर्य एवं आर्य समाजी हूँ फिर क्या था, अगले 10 माह में ही महाविद्यालय ने नमस्कार कर दिया क्योकि एक आर्य कि कर्तव्यपरायणता और निष्ठा उनको एक पल न सुहाई।

धार्मिक, सत्य पर अडिग, वेदमार्ग के राही, वेद परायण आचार्य जी को असत्य और अनिष्ठा से परहेज था । अतः स्वतंत्र रूप से अलवर में रहकर वेद विद्या का प्रकाश देश भर में फैलाते रहे, संस्कार आदि के विशेषज्ञ के तौर पर सुविख्यात हुए। लम्बे काल तक अनेकों नवयुवकों को आर्य समाज के प्रति निष्ठावान बनाते रहे, आचार्य जी ने देश व्यापी प्रचार किया।

आपकी कुशाग्र बुद्धि प्रारंभ से ही थी किन्तु स्मरण शक्ति इतनी तीव्र थी कि आप कालान्तर में शास्त्रार्थ महारथी बने आपने अनेको मंचो पर महर्षि दयानन्द के समान अपनी विद्वत्ता, तार्किक बुद्धि, ज्ञान से विजय प्राप्त की। आप प्रचार कार्य को और अधिक गति देने, अपने ज्ञान, अनुभव और

विचारों को साकार मूर्त रूप देने के लिए लेखन में प्रवृत हुए। आपका लेखन बड़ा विशाल और विशेष जन उपयोगी रहा है। व्याकरण की अनेकों पुस्तकें आने वाली कई सदियों तक संस्कृत विद्यार्थियों को प्रकाशमान अवश्य करती रहेंगी।

आचार्य श्री ने विद्वत्ता के जिस स्तर को छुआ और लम्बे समय तक उस स्तर को बनाये रखा वो अवश्य ही आर्य जनों के लिए अनुकरणीय और प्रेरणादायक रहा है और भविष्य में भी रहेगा। आप का त्याग, सत्य, धर्मनिष्ठः, तपस्वी जीवन और आर्ष ग्रंथो के पठन, पाठ एवं स्वाध्याय की प्रवृती इस आर्य जगत् को सदियों तक प्रकाशमान बनाये रखे यही ईश्वर से मेरी कामना है ।

अवनीश मैत्रिः, जयपुर

आचार्य सत्यानन्द जी वेदवागीश

ऋषि उद्यान में ऋषि मेले के अवसर पर आचार्य जी का प्रथम दर्शन एवं उद्‌बोधन प्राप्त हुआ। उनकी महानता से परिचय हुआ। दिग्गज, अद्वितीय विद्वान्, स्वाध्यायी, विद्यानुरागी, महान् परिश्रमी, धुन के धनी, सत्य, सरल, निर्लोभी एवं सिद्धान्तों पर जीवन न्योछावर करने वाले ऋषि दयानन्द के परमभक्त, आर्य समाज के सेवक एवं अन्तिम समय तक वैदिक परम्पराओं, यज्ञ एवं संध्या को आचरण में रखते हुये जन सामान्य परिवारों तक पहुँचाने का जो अनुकरणीय उदाहरण आचार्य श्री ने प्रस्तुत किया वह वंदनीय है।

आचार्य श्री को बार–बार राष्ट्रपति पुरस्कार के लिए नामित किया गया, उनसे अपेक्षा की गई कि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश पर उनके विशाल ग्रन्थ को इसमें से हटा लें, उन्होंने राष्ट्रपति पुरुस्कार पर ऋषि को प्राथमिकता दी। अपनी ऋषि भक्ति एवं सिद्धान्तों पर सदैव आर्य समाज की विशाल संस्थाओं (गद्दियों) के प्रतिष्ठा–पदों, सुविधाओं को ठुकराते हुए दयानन्द जी के सच्चे अनुयायी होना सिद्ध किया एवं ऋषि ऋण हेतु अपने जीवन को अर्पण कर दिया।

आयु के इस पड़ाव में भी प्रातः ईश स्मरण, भ्रमण, स्नान, प्राणायाम, संध्या एवं यज्ञ यह उनकी दिनचर्या का अनिवार्य अंग था। उनके मधुर कंठ से निकले हुये भजनों में ईश्वर अनुभूति स्पष्ट रूप से चहुँ ओर बिखरती थी। आचार्य श्री कर्त्तव्य पालन, समय पालने के पाबंद थे। यह उनके सम्पर्क में आने वाले सभी लोग जानते हैं। उनके द्वारा रचित साहित्य विश्व साहित्य की धरोहर है। जिसने संस्कृत, आर्य समाज एवं भारतीय साहित्य को गौरवान्वित किया है। यद्यपि हम आर्य जनों की लापरवाही से मानव समाज यथोचित रुप सें लाभान्वित नहीं हो सका। पुत्री भूमिका के जन्म दिवस पर होने वाले पारायण एवं सामान्य यज्ञों में आचार्य श्री सत्यानन्द जी के साथ साथ आचार्य धर्मवीर जी, स्वामी विष्वंड्. जी, आचार्य सत्यजित् जी, आचार्य सत्येन्द्र जी, श्री मोक्षराज जी, श्री वामदेव जी, श्री रविशंकर जी एवं अन्य ब्रह्मचारियों का सदैव सानिध्य प्राप्त होता रहा, उन अनेक अवसरों पर आचार्य श्री सत्यानन्द जी की महानता विद्वत्ता एवं सरलता को सभी ने प्रत्यक्ष अनुभूत किया। उनकी आवश्यकता पूछने पर कहते थे कि भगवान चाहिए। अपनी सरल सुबोध शैली पे वैदिक सिद्वान्तों को जन सामान्य के लिए हृदयग्राही बना देना आचार्य जी का ही काम था। आर्य जगत् के दिग्गज विद्वान् भी उनके सानिध्य से लाभान्वित होते थे। उनकी विद्या का लोहा मानते थे। किन्तु अभिमान से वे कोसों दूर थे।

हमारे परिवार ने उनके सान्धिय से जो विशेष आनन्द, स्नेह एवं मार्ग दर्शन प्राप्त किया है एवं उनके द्वारा आयोजित परायण यज्ञों, प्रवचनों, आशिर्वाद प्राप्त हुआ उससे हम संभवतः कभी उऋण नही हो सकेंगें। हम कृतज्ञ, एवं अनुगृहीत हैं। आपके सानिध्य से वंचित होना हमारी व्यक्तिगत क्षति है। पुत्री भूमिका एवं समस्त परिवार उनको हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं तथा परमपिता परमेश्वर से उनके आदेशो को पालन करने की शक्ति मांगते हैं।

अनीश शर्मा, अजमेर

सामवेद पारायण यज्ञ करवाते हुए

विवाह वर्षगांठ के अवसर पर

धर्मपत्नी श्रीमती सुमित्रा आर्या एवं
पुत्र श्री श्रुतिधर आर्य के साथ

पण्डित जी द्वारा सुसज्जित यज्ञवेदी

डाक पंजियन सं. RJ / JPC / 214 / 2020-22 आर. एन. आई नं.10471/60

वेद एवं व्याकरण के सूर्य, निरभिमानी, स्वनामधन्य

स्मृतिशेष आचार्य सत्यानन्द जी वेदवागीश

(23 दिसम्बर 2019)

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि

प्रेषकः-
सम्पादक,
आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
हनुमान ढाबे के पास , राजा पार्क,
जयपुर-302004

प्रेषित

टिकट